Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

भारतीय वाङ्मय मे प्राण और उसका वैज्ञानिक विवेचना – एक अध्ययन

Kumar Rakesh Roshan Parashar[1]* Dr. Kiran Verma[2]

[1] Research Scholar, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

[2] Assistant Professor, Department of Yoga in Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

सार – ***सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्राण में ही टिका हुआ है प्राण के जाते ही इस ब्रह्माण्ड में सब जीव निर्जीव हो जायेंगे, इस धरती पर जितने भी कीट, पतंगे, सभी वृक्ष, जीव-जन्तु आदि सब प्राण वायु का सेवन करते हैं और सभी में प्राण उपस्थित हैं, जहाँ तक की वाहन, कुकर, दीपक, गैस और सभी इंजन आदि मशीनों में भी प्राण होते हैं, अर्थात् वायु होती है, ये सभी भी अपान वायु छोड़ती है, जैसे जब कुकर अग्नि से प्राण रूपी अग्नि लेता है, तो उसे कूकर की सीटी के रूप में अपान वायु छोड़ता है। इसी प्रकार सभी इंजन और मशीनें जब चलती हैं, तो उन सभी में उनकी उल्टी हवा, गर्मी फेंकने का भी साधन होता है, अर्थात् अपान वायु का साधन होता है। जैसे यदि हमने दीपक जलाया, और यदि उसे पूरी तरह ढक लेंगे तो वह बुझ जायेगा, यदि उसे थोड़ी वायु मिलती रहती है, तो वह जलता रहेगा। इस प्रकार प्राण वायु की सभी को आवश्यकता होती है। प्राण शब्द प्र उपसर्ग पूर्वक अन् धातु से घञ् प्रत्यय लगा कर बना है। सर मोनियर विलियम्स ने इसका अर्थ The birth of life, breath, respiration, pirit, vitality इत्यादि किया है।' प्राण का अर्थ एवं महत्त्व पाँच तत्त्वों में से एक मुख्य तत्त्व वायु हमारे शरीर को जीवित रखती है और वात के रूप में शरीर के तीन दोषों में से एक दोष है, जो श्वास के रूप में हमारा प्राण है।***

----------X----------

परिचय

भारतीय सभ्यता और संस्कृति का स्रोत वैदिक वाङ्मय है वेद शब्द-श्विद् जाननाश से बना है। अत: 'वेद' का व्युत्पत्तिपरक का अर्थ है। वह साहित्य जिससे जाना जाये। भारतीय परम्परा वेद को परम तत्व जानने का साधन मानती है। और लौकिक व्यवहार के मार्ग को प्रकाश करने का प्रकाश पुञ्ज मानती है। मीमांसा दर्शन में कहा गया है

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।

एतं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता।।

प्राचीन परम्परा के अनुसार सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने ऋषियों के हृदय में मन्त्रों का प्रकाश किया, इसलिए मन्त्रों के प्रवर्तक ऋषियों को मन्त्र दृष्टा कहा जाता है। (साक्षात् कृत धर्माणः ऋषयो बभूवुः तेऽसाक्षात्ष् निरुक्त 1-6) प्राचीन ऋषियों ने बाद के ऋषियों को मंत्रों का उपदेश दिया जिन्हें कंठस्थ कर वे आगे अपने शिष्यों को कंठस्थ कराते रहे। सभी मन्त्र प्रवर्तन की परम्परा सुदीर्घ काल तक चलती रही होगी क्योंकि मन्त्रों में ही प्राचीन और नूतन ऋषियों का उल्लेख आता है। कालान्तर में आवश्यकता अनुभव होने पर जब इन मन्त्रों का संग्रह किया गया तो उस संग्रह का नाम 'वेद' प्रसिद्ध हुआ। श्रवण परम्परा से प्राप्त होने के कारण वेद को 'श्रुति' भी कहते हैं। 'श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेय:' (मनु 2-10) वेद के अन्य नाम भी प्रसिद्ध हैं।

वेदों में संग्रह होने के कारण वेद को सामाम्नाय: कहते हैं। निरूक्त में 'मन्त्रवर्ण' नाम भी आया है। मन्त्रों के तीन भेद होने से वेद को 'त्रयी' भी कहते हैं। वेद के संकलन का 'संहिता' नाम भी प्रसिद्ध है। मन्त्रों के अनुवर्ती साहित्य को भी 'श्रुति' और 'वेद' संज्ञा प्राप्त हुई है।

'मन्त्र-ब्रह्मणयोर्वेदनामधेयम्श (आश्र, श्रौत 24) भाष्यकार आचार्य शंकर उपनिषदों के उदाहरणों का 'श्रुति' नाम से संकेत करते हैं।

मन्त्रों के तीन प्रकार ऋक, यजुस्, सामन् होने से यद्यपि मन्त्र संकलन को 'त्रयी' नाम से प्रसिद्धि मिली तो भी उनका प्रचलन चार संहिताओं के रूप में मिलता है। ये संहितायें हैं

www.ignited.in

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। संहिता रूप में मन्त्रों का यह संकलन यज्ञ-कर्मकाण्ड में प्रयोग के अनुसार किया गया है। यज्ञ कर्म कराने वाले चार प्रधान पुरोहित 'ऋत्विज' थे।

यज्ञ कर्म में इनका अलग-अलग दायित्व होता था। जिन मन्त्रों का होता पाठ करता है। उन्हें ऋचा कहते हैं। जिनका उद्गाता गान करता है। उन्हें साम् कहते हैं। शेष जो प्रायः गद्यात्मक मन्त्र हैं। और जो प्रायः अध्वर्यु की यज्ञपरक क्रिया या व्याख्या का उपदेश करते हैं। उन्हें 'यजुः' कहते हैं। चैथे ऋत्विज् ब्रह्माश के अधिकार में आने वाले 'अथर्व' और अङ्गिरस नाम वाले मन्त्र हैं। सुदीर्घ काल तक चली इन मन्त्रों की अध्ययन-अध्यापन परम्परा और देशान्तर के कारण प्रत्येक संहिता के कुछ भेद भी हो गये थे जिन्हें 'शाखा' नाम से जाना जाता था। महाभाष्यकार पतञ्जलि ने (पस्पशाविक) में प्रत्येक संहिता की शाखा संख्या का उल्लेख किया है। उनके अनुसार यजुर्वेद की एक सौ शाखायें सामवेद की एक हजार शाखायें, ऋग्वेद की इक्कीस शाखायें और अथर्ववेद की नौ शाखायें प्रचलित थीं ये शाखायें काल परिवर्तन से लुप्त हो गयी हैं। अब तो प्रत्येक वेद की थोड़ी सी ही शाखायें उपलब्ध होती हैं।

साहित्य की समीक्षा

(क) ऋग्वेद में प्राणतत्व

लाहौर, पंजाब 2013 सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय में ऋग्वेद सबसे प्राचीन माना गया है। ऋग्वेद काण्ड की दृष्टि से ज्ञान काण्ड माना गया है। ऋग्वेद में अनेक विषयों के ज्ञान का भण्डार है। इनमें हमें प्राण के विषय में भी ज्ञान प्राप्त होता है। चारों वेदों में (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद) में से सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद ही है। अनेक पुराणों आदि में 'पतञ्जलि' के 'महाभाष्य' में ऋग्वेद की 21 शाखाओं का उल्लेख है। 'ऋग्वेद' के प्रत्येक सूक्त के अपने ऋषि, देवता और छन्द हैं। आधुनिक समालोचकों के अनुसार ये ऋषि मन्त्रों के रचयिता थे।

2014 सरस्वती दयानन्द ऋग्वेद हिन्दू-धर्म' का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। इसमें सभी प्रकार के सामाजिक, पारिवारिक, संस्कारित, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और साहित्यिक आदि विषयों की विस्तृत जानकारी प्राप्त करायी गयी है। ऋग्वेद में अनेक विषयों के ज्ञान का भण्डार है। इसलिये इसमें हमें 'प्राण' के विषय में भी ज्ञान प्राप्त होता है जो इस प्रकार है

प्राण की उत्पत्ति

2015 शिवानन्द ऋग्वेद में प्राणतत्व की उत्पत्ति का स्पष्ट उल्लेख है। हिरण्यगर्भ सूक्त में सृष्टि की उत्पत्ति तथा अनेक क्रियाओं का वर्णन है। सृष्टि के समय जब हिरण्यमय अण्ड के गर्भभूत प्रजापति को धारण करने वाले जल सर्वत्र व्याप्त हो गये। तब उस गर्भभूत प्रजापति से एक तत्त्व 'असु' उत्पन्न हुआ। यह प्राण ही सब प्राणियों में स्थित हुआ और इसके कारण ही वे प्राणी कहलाये। हिरण्यगर्भ ऐसे प्राणयुक्त और निमेष युक्त प्राणियों का राजा हुआ और वह ही द्विपद चतुष्पद पर शासन करता है।

प्राण की पाँच वृत्तियाँ

2016 ई. रानाडे रामचन्द्र सृष्टि के क्रम में कब, किससे और क्या उत्पन्न हुआ यह बताने वाले पुरुष सूक्त में बताया गया है कि इस विराट् पुरुष के मन से चन्द्रमा, चक्षु से सूर्य, मुख से अग्नि और प्राण से वायु उत्पन्न हुआ क्योंकि प्राण नामक तत्त्व विराट् पुरुष का था। चूँकि वह वायु से पहले ही विद्यमान था और फिर उसी प्राण से वायु उत्पन्न हुआ। प्राण ही जीवन का मुख्य तत्त्व है और अपानादि उसके अन्य रूप हैं। यह संकेत भी ऋग्वेद में मिलते हैं। दसवें मण्डल के 189वें सूक्त का दूसरा मन्त्र इसी बात को उजागर करता है। सूक्त की ऋषिका है सार्पराज्ञी और देवता है सूर्य। मन्त्र इस प्रकार है- 'इस (सूर्य) की रोचमाना दीप्ति प्राण से अपान करती हुई शरीर में अन्दर विचरण करती है। महान् सूर्य द्यौलोक को प्रकाशित करता है। सायण ने प्राण और उसकी क्रिया प्रणाली की व्याख्या की है। मुख्य प्राण की प्राणादि पाँच वृत्तियाँ हैं जिनमें नाड़ियों के द्वारा वायु का उर्ध्व निर्गमन प्राण कहलाता है। वायु का अवाङमुखनयन अपानन कहलाता है। सूर्य की दीप्ति प्राण से अपानन करती हुई शरीर के अन्दर विचरण करती है। यही प्राण प्रक्रिया है। असु ।

2016 ई. तिवारी शशि इनके अतिरिक्त ऋग्वेद में एक स्थान पर असु शब्द अग्नि के लिए, अर्थात् अग्नि की ज्वालाओं के लिए भी प्रयुक्त हुआ है। ऋग्वेद के भाष्यकार श्आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री ने असु शब्द का प्रयोग प्राणों को तृप्त करने वालों के लिए प्रयुक्त किया है। पाँच स्थानों पर असुनीति' शब्द विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। ऋ० 10.12.4 में सायण ने असु शब्द का अर्थ प्रज्ञा किया है और असुनीति का अर्थ प्रज्ञा द्वारा की गई स्तुति किया है। ऋ०10.15.14 में असुनीति का अर्थ प्राणों का नेता 'अन्तरात्मा' किया है। ऋ० 10.16.2 में असुनीति से तात्पर्य प्रेत के प्राणों के अपनयन से है। तथा ऋ०10.59.5 और 6वें मन्त्र में असुनीति का अर्थ

www.ignited.in

प्राणों को ले जाने वाली देवी से है। विभिन्न प्रसंगों के अनुसार असुनीति का अर्थ चाहे जो भी हो पर असु शब्द का अर्थ प्राण ही है।

सार यह है कि ऋग्वेद में प्राण अथवा असु शब्द का प्रयोग यद्यपि बहुत कम है। पर इससे इसका महत्त्व कम नहीं हो जाता। बीज यद्यपि देखने में छोटा होता है, पर शक्ति का केन्द्र वही होता है जिससे पल्लवित होकर वृक्ष-फूल-फल आदि होते हैं। ऋग्वेद को आधार बनाकर ही 'प्राण' की व्याख्या उत्तरोत्तर ग्रन्थों में होती गई और प्राण का महत्त्व बढ़ता चला गया।

2016 गुप्त नाथुराम ऋग्वेद में प्राण शब्द का उल्लेख बहुत कम स्थानों पर या कह सकते हैं कि केवल चार स्थानों पर हुआ है जबकि इस शब्द का ही पर्यायवाची 'असु' शब्द इससे लगभग तीन गुणा ज्यादा प्रयुक्त हुआ है। यूँ तो ऋग्वेद में कई छोटी-छोटी अकिंचन वस्तुओं की जैसे उलूखल-मुसल, अक्ष, मण्डूक आदि की भी देवता के रूप में स्तुति हुई है। आश्चर्य इस बात का है कि प्राण जैसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व का ऋग्वेद में उल्लेख तो है, पर देवता के रूप में एक भी सम्पूर्ण सूक्त 'प्राण' की स्तुति में नहीं है। प्राण की तरह ही एक अन्य तत्त्व 'असु' का उल्लेख भी है और प्राण तथा असु को एक ही तत्त्व बताया गया है। फिर भी इन दो शब्दों में निहित इस तत्त्व के स्वरूप का वर्णन बहुत ही कम है। प्राण और 'असु' एक तत्त्व हैं यह तथ्य ऋग्वेद के दसवें मण्डल के 59वें सूक्त के पाँचवें, छठे और सातवें मन्त्र से ज्ञात होता है। पाँचवें मन्त्र में 'असुनीति (प्राणों की नेत्री देवी)', छठे मन्त्र में 'असुनीति' और 'प्राण' और सातवें में 'असु' शब्दों के एक ही प्रसंग में एक ही अर्थ में प्रयोग होने से प्राण और असु का समानार्थक होना ज्ञात होता है।

प्राण जीवन का आधार

दरियागंज, ई. 2017 ऋग्वेद के कुछ मन्त्रों में प्राण को जीवन का आधारभूत तत्त्व माना गया है। प्रथम मण्डल के एक मन्त्र में अग्नि को आयु के लिए प्राण समान बताया गया है। यह अग्नि धन के समान चयनीय, सूर्य के समान दर्शयिता, आयु के लिए प्राण के समान, पुत्र के समान हितकारी, गतिमान् अश्व के समान भर्ता, जल के समान प्रीणयिता, शुचि विशिष्ट प्रकाशयुक्त वनों को जलाता है। एक अन्य मन्त्र में इन्द्र के लिए कहा गया है कि उसने देवताओं को जीतने की इच्छा करने वाले असुर के प्राण लेकर उदकों को प्रेरित किया।' ऋग्वेद के एक अन्य मन्त्र में पितरों को प्राणों का रक्षक बताया गया है। उत्तम और मध्यम पितर उत्तम छवि प्राप्त करें और हमारे प्रति सौम्य हों। जो पितर वृक समान हिंसक नहीं थे, जो ऋतज्ञ थे और हमारे प्राणों के रक्षक थे, वे आह्वानों में हमारी रक्षा करें।' प्राण ही जीवन का आधार है जिसके रहने पर ही हम सूर्य के दर्शन कर सकते। हैं। अर्थात् प्राण रहने पर ही अगला दिन देखा जा सकता है। यह बात इस मन्त्र से स्पष्ट होती है-'यम के दूत दो कुत्ते जनों को लक्ष्य करके घूमते हैं। वे दोनों चैड़ी नाक वाले दूसरों के प्राणों से तृप्त होने वाले, विस्तृत बल वाले सूर्य के दर्शन के लिए भद्र प्राण को पुन: हमें दे।

ऋग्वेद में इस बात का स्पष्ट संकेत है कि 'प्राण' नामक तत्त्व सृष्टि से पहले विद्यमान नहीं था। ऋषि दीर्घतमा दृष्ट एक सूक्त में ऋषि ने संकेत दिया है कि सृष्टि से पहले 'असु' अथवा प्राण नहीं था। प्रपंच की कालायत्तता (कालक्रम) का प्रतिपादन करके उस मेहरचन्द लक्ष्मणदास, 2018 ई सृष्टि के कारणभूत परमेश्वर के विषय में कहते हैं। प्रथम उत्पन्न (अर्थात् सृष्टि से पहले। अथवा अव्याकृत अवस्था में उत्पन्न प्रपंच को) अस्थियुक्त शरीर के कार्यभाव को प्राप्त अस्थिरहिता (प्रकृति) धारण करती है, यह किसने देखा है? भूमि सम्बन्धी (स्थूल शरीर), असुः (प्राण अर्थात् सूक्ष्म शरीर), रक्त (अर्थात् सप्तधातूपलक्षित शरीर), आत्मा (इन सबसे सम्बद्ध चेतन तत्त्व) कहाँ थे (अर्थात् ये सब सृष्टि से पहले नहीं थे)? उस समय कौन (प्रष्टा) किसी विद्वान् को पूछने गया था (अर्थात् कोई नहीं) प्रस्तुत मन्त्र परमात्मा और माया को सृष्टि पूर्व अवस्था की ओर संकेत करता है, जब अस्थियुक्त शरीर, प्राण और यहाँ तक की जीवात्मा भी अविद्यमान थे।

उद्देश्य

1. शरीर में प्राण शक्तत के मित्व को समझ सकेंगे।
2. जीवन में प्राण की आवश्यकता को जान सकेंगे।
3. योग साधना द्वारा प्राण शक्तत को बढानेके उपायों को जान सकेंगे।
4. प्राण के आध्याक्त्मक और वैज्ञाननक मित्व को जान सकेंगे।

उपसंहार

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में श्वैदिक वाङमय में प्राणतत्त्वश् में विशद् अध्ययन सात अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में वैदिक वाङमय का संक्षिप्त परिचय बताया गया है, जिसमें वेद का अर्थ, साम् का अर्थ अथर्ववेद के विषय, अथर्ववेदीय वयं विषय का विवेचनात्मक दृष्टि से वर्गीकरण इसके अतिरिक्त 'ब्राह्मण' शब्द से अभिप्राय भी बताया गया है तथा 'ब्राह्मणग्रन्थ के स्वरूप का परिचय भी

www.ignited.in

दिया गया है। जैसे ब्राह्मण नाम कर्मणरतन्मन्त्राणां च व्याख्यानो ग्रन्थ।

अर्थात-(यज्ञ रूप) कर्म को ब्राह्मण कहते हैं तथा उस यज्ञ के मन्त्रों की व्याख्या करने वाले ग्रन्थ को भी ब्राह्मण कहते हैं।

संदर्भ

1. अवस्थी डॉ. विश्वम्भरदयाल- वैदिक साहित्य, संस्कृति और दर्शन

2. सरस्वती प्रकाश मन्दिर, 59 नया बेरहना, इलाहाबाद आर्या कुसुम लता- पुरुष सूक्त का विवेचनात्मक अध्ययन- समर्पणशोध संस्थान उपाध्याय बलदेव- वैदिक साहित्य और संस्कृति- काशी, 2013 ई. कीथ, आर्थर बेरीडेल- वैदिक धर्म एवं दर्शन- मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2013 गुप्त नाथुराम- वेद और जीवन- सार्वदेशिक प्रकाशन लि, दरियागंज, ई. 2018,

3. (संकलनकर्ता एवं भाष्यकार) नई दिल्ली 2 त्रिवेदी, मातृदत्त- अथर्ववेद एक साहित्यिक अध्ययन- होशियारपुर-2014 ई. तिवारी शशि- सूर्यदेवता- मेहरचन्द लक्ष्मणदास, दिल्ली- 2014 ई.

4. पुरुषार्थी, योगेन्द्र- वेदों में योग विद्या- गोविन्दराम हासानन्द, यौगिक शोध संस्थान,

5. योगधाम, ज्वालापुर, हरिद्वार भार्गव डॉ. दयानन्द, वेद-विज्ञान वीथिका- राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर 2015 मैक्डोनल, वैदिक माइथालोजी- अनु. रामकुमार राय, चैखम्बा विद्या भवन,

6. वाराणसी, 2015 ई. राघव रागेय- प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास- आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली,

7. द्य 2016 ई. रानाडे रामचन्द्र दत्तात्रेय- उपनिषद् दर्शन का रचनात्मक

8. अनु. रामानन्द तिवारी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर- 2016 सर्वेक्षण बेलणकर स. हरि दामोदर- ऋकसूक्त वैजयन्ति- वैदिक संशोधन मण्डल,

9. द्य पूना (विद्यापीठ नगर), 2017 ई. शर्मा पं. रघुनन्दन- वैदिक सम्पत्ति- माता कलावती धर्मार्थ न्यास, पानीपत, 2018 ई. शास्त्री वेदप्रकाश- लोक परलोक- गोविन्दराम हासानन्द, नई दिल्ली, 2017 ई. शास्त्री बाबूराम- सार्वभौम वैदिक धर्म- आर्श दयानन्द वैदिक शोधपीठ,

10. दयानन्द कॉलेज, अजमेर 2016 शिवानन्द- जीवन और सुख- सर्वसेवा संघ प्रकाश, राजघाट, वाराणसी, 2016 ई. शुक्ल नित्यानन्द- ब्राह्मण ग्रन्थों में सृष्टि विचार- वाराणसी, 1983 ई. मोगावासी पं. संतराम- संक्षिप्त महाभारत- जनज्ञान प्रकाशन, 90वां, पुष्प, नई दिल्ली 1925 ई. A Mahuli R- Gapalacharya M-A- The Heart of the Rigveda

11 Omaiya Publications Pvt- Ltd- Bombay, New Delhi सदानन्दयोगीकृत- वेदान्तसार- विवृति- कृष्णकान्त त्रिपाठी, रतिराम शास्त्री साहित्य भण्डार,

Corresponding Author

Kumar Rakesh Roshan Parashar*

Research Scholar, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

drharshkumar@hotmail.com

www.ignited.in